कक्षा -12

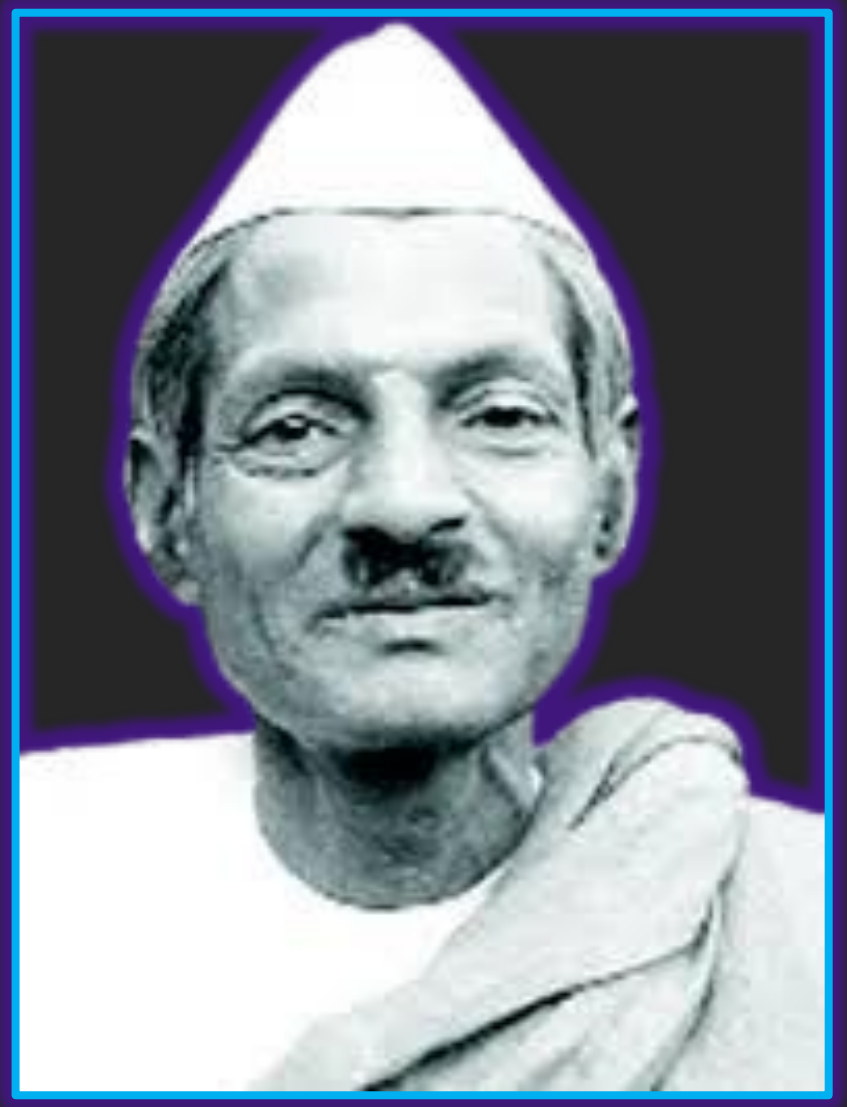

सामान्य हिंदी एवं साहित्यिक हिंदी

डॉ वाशुदेव शरण अग्रवाल

साहित्यिक -परिचय

संक्षिप्त-परिचय

- जन्म- 7 अगस्त, 1904 ई०।
- जन्म- स्थान- मेरठ (उ०प्र०)।
- उपाधि- पीएच० डी०, डी० लिट्।
- भाषा- विषयानुकूल, प्रौढ़ और परिमार्जित खड़ी बोली एवं
- शैली- विचारात्मक, गवेषणात्मक, व्याख्यात्मक।
- रचनाएँ- पृथिवीपुत्र, भारत की एकता, कल्पवृक्ष, माताभूमि, वाग्धारा।
- मृत्यु- 27 जुलाई 1967 ई०।
- प्रसिद्धि- निबन्धकार, टीकाकार और साहित्यिक ग्रंथों के कुशल संपादक के रूप में ख्याति।

जीवन-परिचयः-

- डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म सन् 1904 ई० में मेरठ जनपद के खेड़ा ग्राम में हुआ था। इनके माता-पिता लखनऊ में रहते थे; अतः इनका बाल्यकाल लखनऊ में ही व्यतीत हुआ। यहीं इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा भी प्राप्त की। इन्होंने 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' से एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। लखनऊ विश्वविद्यालय ने 'पाणिनिकालीन भारत' शोध-प्रबन्ध पर इनको पी०एचडी० की उपाधि से विभूषित किया। यहीं से इन्होंने डी०लिट्० की उपाधि भी प्राप्त की। इन्होंने पालि, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व का गहन अध्ययन किया और इन क्षेत्रों में उच्चकोटि के विद्वान् माने जाने लगे। 27 जुलाई, सन् 1967 ई० में इनका स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक परिचयः-

डॉ० अग्रवाल लखनऊ और मथुरा के पुरातत्व संग्रहालयों में निरीक्षक केंद्रीय पुरातत्व विभाग के संचालक और राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली के अध्यक्ष रहे। कुछ काल तक वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इंडोलॉजी विभाग के अध्यक्ष भी रहे। डॉ० अग्रवाल ने मुख्य रूप से पुरातत्व को ही अपना विषय बनाया उन्होंने प्रागैतिहासिक वैदिक तथा पौराणिक साहित्य के मर्म का उद्घाटन किया और अपनी रचनाओं में संस्कृति व प्राचीन भारतीय इतिहास का प्रामाणिक रूप प्रस्तुत किया। वे अनुसंधाता, निबंधकार, संपादक के रूप में भी प्रतिष्ठित रहे।

रचनाएँ:-

- **निबंध संग्रह-** पृथिवीपुत्र, कला और संस्कृति, कल्पवृक्ष, भारत की मौलिक एकता, माताभूमि, वाग्धारा आदि।
- **शोधग्रंथ-** पाणिनिकालीन भारत।
- **सम्पादन-** जायसीकृत पद्मावत की संजीवनी व्याख्या, बाणभट्ट के हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन। इसके अतिरिक्त इन्होंने पालि, प्राकृत और संस्कृत के अनेक ग्रन्थों का भी सम्पादन किया।
- **भाषा-शैली-** अग्रवाल की भाषा शुद्ध, परिष्कृत, व्यावहारिक, सुबोध और स्पष्ट खड़ीबोली है। गवेषणात्मक, व्याख्यात्मक एवं उद्धरण शैलियों का प्रयोग प्रमुखता से किया है।